<?xml version="1.0" ?>			
<?xml-stylesheet type="text/css" href="home.css"?>			
<Doc id="maith -w-media-		"	lang="Maithili">
<Header type="text">			
<encodingDesc>			
<projectDesc>	CIIL-Multilingual parallel text corpora		</projectDesc>
<samplingDesc>	Simple written text only has been transcribed. Diagrams, pictures and tables have been omitted. Samples taken from page 18-24		</samplingDesc>
</encodingDesc>			
<sourceDesc> <biblStruct> <source>			
	<category>	Aesthetics	</category>
	<subcategory>	Literature-Essays	</subcategory>
	<text>	Book	</text>
	<title>	BanaBatt	</title>
	<author>	Krishna Murthy	</author>
	<language>	Maithili	</language>
	<translator>	RamDev Jha	</translator>
	<vol>		</vol>
	<issue>		</issue>
</source>			
<textDes>			
	<type>		</type>
	<headline>	Banak Kavy-Kala	</headline>
	<words>		</words>
</textDes>			
<imprint>			
	<pubPlace>	India-New Delhi	</pubPlace>
	<publisher>	Sahitya Akademi	</publisher>
	<pubDate>	1989	</pubDate>
</imprint>			
<index>		Ch-2	</index>
</biblStruct> </sourceDesc>			
<profileDesc> <creation>			
	<date>		</date>
	<inputter>	H.S.Rupa	</inputter>
	<proof>		</proof>
</creation>			
<langUsage>			</langUsage>
<wsdUsage>			
<writingSystem id="ISO/IEC 10646">Universal Multiple-Octet Coded Character Set (UCS). </writingSystem>			
</wsdUsage>			
<textClass>			
<channel mode="w">		print	</channel>
<domain type="public">			</domain>
</textClass> </profileDesc>			

</Header>		
<text><body>		
<p>	आधुनिक विद्वान् गम्भीर अनुसन्धान द्वारा सिद्ध कयलनि अछि जे संस्कृतमे रोमांटिक-परिकथा ओ वीरगाथाक परम्परा कमसँ कम पतञ्जलिक (दोसर शताब्दी ईसा पूर्व) काल तक अवश्य पुरान अछि जे अपन महाभाष्यमे प्रसंगवश एहिमे सँ किछु कृतिक उल्लेख कयलनि अछि। अलंकृत क्लासिकी गद्यशैली सेहो 150 ई. एवं 350 ई. तक शिलालेखमे भेटैत अछि। परन्तु ओहिमे सँ कोनो टा कृति हमरा सबकेँ उलब्ध नहि अछि, तँ बाण केँ उत्कृष्ट प्रयोगक कारणे एहि काव्यरूपक प्रवर्त्तक कविक प्रतिष्ठा देबऽ पड़त। स्वयं बाण द्वारा प्रतिपादित काव्यादर्शक स्पष्ट अवधारणाक बिना हुनक अत्यन्त मौलिक कृतिक सार्थक अध्ययन सम्भव नहि होयत। यदि कादम्बरीकेँ आइ-काल्हिक रोमांटिक उपन्यासक परिप्रेक्ष्यमे राखि पढ़ल जाय तँ कोनो लाभ नहि होयत। यदि हमरा लोकनिकेँ अपन निष्कर्षक कोनो सार्थकता अपेक्षित, तँ ओकरा शास्त्रीय विधान पर आधारित होयबाक चाही, जे ने केवल बाणक युगमे प्रचलित छल बल्कि हुनका द्वारा प्रयुक्तो भेल। अतः एहि विधानक किंचित् विवेचन, यथासम्भव बाणक शब्दमे, अनुचित नहि होयत।	</p>
<p>	हमरा लोकनिकेँ स्वयं बाणसँ काव्य-कलाक सिद्धान्तक खोज करबाक प्रक्रिया स्वीकार करबाक अनिवार्यता एहि हेतु अछि जे काव्य-सिद्धान्तक कोनो एहेन कृति हमरा लोकनिकेँ उपलब्ध नहि अछि जे कालानुक्रममे निश्चित रूपसँ बाणक पूर्वक होअय। प्रतीत होइछ जे काव्यशास्त्रकारक जे प्राचीनतम कृति हमरा लोकनिकेँ उपलब्ध अछि से थिकनि भामह एवं दण्डीक। ओ लोकनि बाणक दुनू महान् कृति देखलाक बादे गद्य-साहित्य एवं एकर विभाजन सम्बन्धी अपन नियमक स्थापना कयलनि। भरतक महान् सिद्धान्त-ग्रन्थ यद्यपि अपेक्षाकृत बेसी पुरान अछि, से पूर्णतः नृत्य-नाट्यसँ सम्बद्ध अछि, आ ओहिमे गद्य-साहित्यक उपेक्षा कयल गेल अछि। अतः हमरा लोकनिकेँ अपन धारणा स्वयं बाणख दृष्टान्तक आधार पर बनबऽ पड़त। यद्यपि अनेको ग्रन्थ, जकर उल्लेख बाण कयने छथि, अनुपलब्ध अछि एवं ओकर पुनः प्राप्ति असम्भव अछि। सौभाग्यसँ अपन दू गोट महान् कृतिक आरम्भेमे सामान्यतः साहित्यक विषयमे एवं गद्य-विधाक सम्बन्धमे विशेष रूपसँ अपन विचार अत्यन्त उदारतापूर्वक प्रकट कयलनि अछि। ई विचार सब स्मरणीय श्लोक सबमे गर्भित भेटैछ। अपन कृतिक बीचोमे प्रसंगान्तरेँ राजसभाक साहित्यिक-चिन्तनक सूचना देलनि अछि।	</p>
<p>	यथा, पछिला घटनाक्रमक एकटा उदाहरणमे ओहि दृश्य सबकेँ लऽ सकैत छी जे अफन शिक्षा समाप्त कयलाक बाद राजप्रासादमे प्रवेश करैत काल राजकुमार चन्द्रापीड़केँ ध्यानाकर्षित कऽ लैत अछि।[1] उत्कीर्ण फलक एं चित्र, सैन्य वेशमे अधिकारीगण, भृत्यगण एवं राजकीय युद्ध-अश्व एवं गज-पालक लोकनिक अत्यन्त स्वाभाविक वर्णन एतऽ कयल गेल अछि। परन्तु सबसँ रोचक वर्णन अछि साहित्यिक आमोद-प्रमोद केर, जे एक सुसज्जित कक्षमे आयोजित अछि। (देखू कादम्बरी', पेटरसन संस्करण, भाग-1, बम्बइ 1900, पृ 88-90।)	</p>
<p>	काव्य गोष्ठीमातन्वता, परिहासकथां विन्दता, बिन्दुमतीं चिन्तयता,	</p>
<p>	प्रहेलिकां भावयता, नरपतिकृतकाव्यसभाषितानि पठता, द्विपदीं	</p>
<p>	गृह्णता, कवि गुणानुत्किरता...	</p>
<p>	उत्कृष्टकविगद्यमिव विविधवर्णश्रेणिप्रतिपाद्यमानाभिवार्थसंचयम्...	</p>
<p>	‘काव्य गोष्ठीमे संलग्न, परिहासकथामे तल्लीन, छन्द एवं प्रहेलिका केर समाधानमे लागल,	</p>

	राजा द्वारा रचित काव्य-सुभाषितक पाठमे लीन, द्व्यर्थक पदसँ युक्त, कविगुण-प्रकाशमान ओहि संचय केर समान छल जाहिमे उत्कृष्ट कविक गद्य-रचनाक अन्तर्गत भिन्न-बिन्न पदयोजनासँ नव नव अर्थ बहराइत अछि।'	
<p>	'सजा कऽ थाक पर थाक राखल सद्यः अर्जित विशाल कोषसँ महल भरल छल; तेहने सन जेना कोनो महाकविक गद्य-रचना, जाहिमे सुसज्जित वर्ण-शृंखला निरन्तर नवीन अभिव्यंजनाकेँ उद्घाटित करैत हो।'[2] (संस्कृतिक मूल साहित्यिक कृतिमे उपमा शब्द-श्लेष पर निर्भर अछि (यद्यपि विशेषणक प्रयोग सामान्यतः होइत अछि) जे कोनो अनुवादमे निश्चित रूपसँ लुप्त भऽ जाइछ।)	</p>
<p>	ई हमरा लोकनिकेँ अति सामान्य जनतब दैत अछि जे एकटा गद्यकारक कृति कोना प्रशंसित होइत छल। शैलीयेकेँ सर्वाधिक महत्त्व छल। नवीन एवं अप्रत्याशित अर्थसँ प्रत्येक पद पर श्रोताकेँ विस्मित करबा लेल प्रत्येक वर्ण सन्तुलित लयात्मक पदमे विलक्षणतासँ गुम्फित रहैत छल। रचनामे एहन भाषा-विच्छित्ति विश्वक कोनो गद्य-साहित्यमे अश्रुते अछि। एकरा लेल ने केवल समास ओ आनुप्रासिकता, श्लेष ओ विरोधाभास, अतिशयोक्ति एवं उप्रेक्षाक सटीक प्रयोग आवश्यक, बल्कि कौतुक एवं रोमांसक सामान्य भावनिर्माणमे (सूक्ष्मार्थयुक्त) बहुआर्थी काव्य-अभिव्यंजकताक प्रचुर साहचर्य सेहो आवश्यक। संस्कृत भाषा पर्यावाची ओ अनेकार्थक शब्दावलीमे ततेक ने समृद्ध अछि तथा सामाजिकवाक्य-रचनाक ततेक ने सौविध्य अछि जे दू अथवा तीन वाक्य मात्रमे पृष्ठ भरि जाइछ। आ बाण भाषाक एहि अद्वितीय गुणक तेहन ने कुशल एवं कलात्मक उपयोग कयलनि अछि जे सम्भवतः हुनक उपलब्धि समानता पुनः संस्कृत साहित्यमे कहिओ नहि भेल। काव्य-कलाक संग-संग व्यंग्य ओ शाब्दिक चमत्कालक विकास हेतु राजदरबार उपयुक्त परिस्थिति प्रदान करैत छल। हुनक कृतिसँ स्पष्ट अछि जे बाण एहि प्रकारक कवि-गोष्ठी मे सोत्साह भाग लैत छलाह आ ओ कवि-कर्ममे निपुण छलाह। ई नहि बिसरबाक जे थीक जे ई आभिजात्य वर्गमात्रक मनोरंजन छल, आ एकर प्रचलन राजकीय आयोजनहिमे छल। अतः एिङ तथ्यक कोनो विरोध नहि अछि जे बाणक दृष्टिमे अलंकृत साहित्यिक गद्य अभिजात कला छल जकरा लेल सुसंस्कार एवं परिष्कृति आवश्यक। ई सामान्य जनक लेल नहि छल। बाणक पूर्ववर्त्ती नहि तँ समसामयिक संस्कृतक एखटा अन्य रोमांस गद्यकार सुबन्धुक गर्वोक्ति छनि जे ओ, 'प्रत्यक्षरश्लेषमय प्रपञ्च विन्यास' कयनिहार छथि। कोनो प्राचीन लेखकमे ई कौशल बाहुल्य अज्ञाते अछि। साहित्यिक अभिरुचिक मूल्यमे परिवर्त्तन भऽ जयबाक कारणेँ ओहि समयक ई सद्गुण आब अवगुण जकाँ बनि गेल अछि। परन्तु आभिजात्य अभिरुचि शब्दाडम्बरेकेँ प्रतिभाक उत्कर्ष एवं गद्यक जीवन कहि प्रशंसा करैत छल। एहि प्रशंसाक पराकाष्ठा एहि उक्तिक रूपमे भेल जे 'गद्यं कवीना निकषं बदन्ति'।–आ भारतीय काव्यशास्त्रमे ई अभ्युक्ति आठम शताब्दी धरि अबैत-अबैत पूर्णतः स्थापित भऽ गेल।[1] (देखू वामनक काव्य शास्त्रविषयक ग्रन्थ, 1, 21, एफ।)	</p>
<p>	अगिला विन्दु, जे ध्यान देबा योग्य अछि, जे बाण हर्षचरितकेँ आख्यायिका एवं एकर विपरीत कादम्बरीकेँ कथा मानलनि अछि, यद्यपि दुनू गद्यकाव्यक अन्तर्गते, अबैत अछि। एहिमे पहिल शब्द बहुप्राचीन ओ वेद एवं महाकाव्यमे आख्यायक संग-संग अबैत अछि। कौटिल्य[2] एवं पतंजलि[3] सेहो एकर प्रयोग कयने छथि। भारतमे मान्य ऐतिहासिक-परम्परासँ आख्यानक संग किछु सम्बन्ध एहि ग्रन्थ सबमे अछि। तात्पर्य ई जे जकर सारतत्त्व ऐतिहासिक प्रसंग पर आधारित रहैत अछि, यद्यपि ई निजंगधरी कथाभिप्रायसँ आच्छादित रहैत अछि। एहिमे	</p>

	उपदेशात्मक सूक्तिक समावेश रहैत छैक आ प्रायः नायक अपन वीरताक वर्णन स्वयं करैछ। अध्यायक विभाजनकेँ उच्छवास कहल जाइछ एवँ अर्थगर्भित सूक्तिक रचना निश्चित (वक्त्र आदि) छन्दमे रहैछ। व्यावहारिक रूपसँ आख्यायिकाक स्पष्ट परिभाषाक रूपमे एतबे कहलनि अछि। परन्तु रोमांटिक-कथाक विशेषताक चर्चा बेसी विस्तारमे कयलनि अछि। हुनक कथन छनि—(1/5) (4/2/60)	
<p>	स्फुरत् कलालापविलास कोमला	</p>
<p>	करोति रागं हृदि कौतुकाधिकम्।	</p>
<p>	रसेन शय्यां स्वयमभ्युपागता	</p>
<p>	कथा जनस्याभिनवा वधूरिव।।	</p>
<p>	हरन्ति कं नोज्ज्वलदीपकोपमै-	</p>
<p>	र्नवैःपदार्थैरूपपादिताः कथाः।	</p>
<p>	निरन्तरश्लेषघनाः सुजातयो	</p>
<p>	महास्रजश्चम्पक कुड्मलैरिव।।[1] (श्लोषक द्वारा बाणक सुझाव छनि जे कथाकेँ रस अथवा भावसँ निश्चित रूपेँ लबालब भरल होयबाक चाही। कादम्बरी, 1, 8-9)	</p>
<p>	'अनायास गम्य कलापूर्ण वाक्य-रचना द्वारा, सुनबामे रमणीय,श्रृंगारादि रस-समन्वित अवान्तर कथासँ युक्त अभिनव कथा लोकक हृदयमे कौतुक वश ओहिना प्रीति-सृष्टि करैछ जेना मधुरालापसँ, विलासादिजन्य कोमलता एवं रसमयताक संग शय्या धरि स्वयं आइलि नववधू लोकक हृदयमे प्रेम उत्पन्न करैत अछि।'	</p>
<p>	'उज्ज्वलदीपकक समान नवीन पद ओ अर्थसँ विनिर्मित निरन्तर श्लेषसँ युक्त कथा चम्पक्क लिका-गुम्फित महामाला सदृश ककर मनकेँ वशीभूत नहि करैछ।'	</p>
<p>	प्रमुख आलंकारिक भामुह (छठम शताब्दी) सेहो एहि विचारकेँ प्रतिपादित कयलनि, यद्यपि हुनक सद्यः परवर्त्ती दण्डीक कथन छनि जे दुनू प्रकारक गद्य-रचनामे अन्तर करब निरर्थक थिक--'तत् कथाख्यायिकेत्येका जातिःसंज्ञाद्वयाङ्किता'। हुनका अनुसार दुनू मे समान तत्व छैक, जेना वीरता, काम एवं कौतुक भाव; तहिना शैलीगत कौशलक विशिष्टता एवं अलंकारक प्रयोगक न्यूनाधिक्य होइतो समानते कहल जायत। एकमे ऐतिहासिकतामे अलौकिकताक समावेश कऽ देल जाइत अछि, जखन कि दोसरमे अलौकिककेँ लौकिक रूपमे प्रयोग कयल जाइत अछि। अतः दण्डी (ईसाक सातम शताब्दी)क किछु टीकाकार लोकनि हर्षचरित जकाँ कादम्बरीकेँ सेहो आख्यायिका[2] मानलनि अछि। (एम्. कृष्माचारी, हिस्ट्री ऑफ संस्कृत लिटरेचर, मद्रास, 1937, पृ. 457।)	</p>
<p>	एकर अतिरिक्त साहित्यक सम्बन्धमे बाण सेहो पूर्णतया सामान्य विचार प्रकट कयलनि जे सार्वत्रिक रूपेँ मान्य अछि एं आलंकारिक लोकनि समान रूपसँ स्वीकार कयलनि अछि। ई हमरा लोकनिकेँ हर्षचरितक प्रारम्भिक पद्यमे भेटैत अछि—	</p>
<p>	लेखक तँ बहुत छथि, परन्तु यथार्थ प्रतिभावान बड़ कम छथि।	</p>
<p>	सन्ति श्वान इवासंख्या जातिभाजो गृहे गृहे।	</p>
<p>	उत्पादका न बहवः कवयः शरभा इव।।[1] (हर्षचरित, 1/5)	</p>
<p>	'घरे-घरे भोजन तकैत कुकुरक संख्या तँ बहुत अछि, परन्तु प्रतिभावान् कवि शरभक समान बड़ कम होइत छथि।'	</p>

<p>	चारि प्रकारक रीति होइत अछि, एहिमे सँ प्रत्येक अ□ना-अ□नीमे विशिष्ट अछि।	</p>
<p>	श्लेषप्रायमुदीच्येषु प्रतीच्येष्वर्थमात्रकम्.	</p>
<p>	उत्प्रेक्षा दाक्षिणात्येषु गौडेष्वक्षरडम्बरः।।[2] (तत्रैव, 1/7)	</p>
<p>	'उदीच्य लोकनि (व्यक्ति)क काव्य श्लेष-बहुल होइछ, □श्चिमी लोकनि मे केवल अर्थ □र ध्यान देल जाइत अछि, दाक्षिणात्यमे उत्प्रेक्षा □सिन्न कयल जाइछ एवं गौड़ प्रदेशमे शब्दाडम्बरकेँ महत्त्व देल जाइछ।'	</p>
<p>	कोनो महान् रचनाक तीन गोट मूलभूत विशेषता होइत छैक, □रन्तु से एखसंगे भेटब दुर्लभ अछि।	</p>
<p>	नवोऽर्थो जातिरग्राम्या श्लेषोऽक्लिष्टः स्फुटो रसः।	</p>
<p>	विकटाक्षरबन्धश्च कृत्स्नमेकत्र दुष्करम।।[3] (तत्रैव, 1/8)	</p>
<p>	'काव्यमे नवीन अर्थ, अग्राम्य शैली, सरल श्लेष, स्फुट रसक संग विकटाक्षर बन्द सेहो होयबाक चाही। एकहि काव्यमे एङि सब गुणक समावेश दुष्कर अछि।'	</p>
<p>	कोनो सुरचित आख्यायिका □ाठककेँ सन्तोष दैत छैक एवं स्फूर्ति उत□न्न करैत छैक, संगहि ई आनन्द एवं शिक्षा सेहो प्रदान करैत छैक।	</p>
<p>	सुखप्रबोधललिता सुवर्णघटनोज्ज्वलैः।	</p>
<p>	शब्दैराख्यायिका भाति शय्येव प्रति□ादकैः।।[4] (तत्रैव, 1/20)	</p>
<p>	'सुन्दरवर्णसँ युक्त एवं सरल मधुर अर्थवला शब्दसँ रचल गेल आख्यायिका सुखमयी एवं सुवर्णघटित शय्याक समान होइत अछि।'	</p>
<p>	एहिसँ ई □ता चलैछ जे महाकाव्यहिक समान एहि गद्य-विधाक द्विधा उद्देश्य छल अर्थात् आनन्द एवं शिक्षा। वर्णनात्मक □द्धति ओ विषय वस्तुक समता छल। अन्तर शैलीमात्रमे छल। प्रायः अन्य कोनो साहित्य, कोनो गद्यलेखककेँ महाकविक समान एतेक ऊँच साहित्यिक प्रतिष्ठा नहि देने होयत। □रन्तु ई कोनो संयोग-विभ्रम नहि छल। ई श्रेय गद्य-लेखककेँ, कृतिकेँ विशिष्ट बनौनिहार उत्कृष्ट रचनाशैली एवं अलंकृत गद्य-रचनासँ अर्जित भेलनि। आभिजात्य-वर्गकेँ ई मानऽ □ड़लैक जे शैलीकारक रू□मे एकटा नीक गद्यकार महाकवि लोकनिसँ बेसी प्रभावशाली होत छथि। ई अत्यन्त □रिष्कृत एवं अत्यलंकृत शाब्दिक कला थिक, जे, अ□न समकालिक भारतीय मूर्तिकलाक प्रवृत्ति मात्रसँ तुलनीय अछि। यदि कोनो महाकाव्य-लेखक उ□मा एवं रू□क अलंकारक □िरमित प्रयोग करैत छथि एवं प्रायः वाक्यश्लेष ओ विरोधाभास सन कठिन अलंकारक सर्वथा उ□ेक्षा करैत छथि, तँ बाण सन गद्य-कवि दोसरहि प्रकारक अलंकारक कुशल प्रयोगमे उल्लसित होइत छथि। एहि अलंकृत शैलीमे व्याघात यैह जे अर्थाभिव्यक्ति एवं भाव-संप्रेषण अनिवार्य रू□सँ बाधित होइछ। बाणक समकालिक सुबन्धु अ□न शब्द-चातुर्य एवं □ाण्डित्यक अछैतो एहि दुनू विन्दु □र दुर्भाग्यसँ □ैघ त्रुटि कऽ गेलाह अछि। बाण सेहो कखनो कऽ चुकि गेलाह अछि। □रन्तु एकर एकमात्र श्रेय आ प्रतिभा बाणेकेँ छनि जे सब मिलाकऽ ओ ने केवल वर्णनक निर्बाध प्रवाहक निर्वाहे कयलनि, प्रत्युत अ□न □ात्र सभकेँ अनुप्राणित कयनिहार असंख्य भावकेँ सफलता□ूर्वक चित्रित कयलनि अछि।	</p>
<p>	बाण अ□न □ूर्ववर्ती व्यास, ग्रवरेसन, भास एवं कालिदासक प्रति अत्यन्त श्रद्धा प्रकाट कयलनि अछि, किएक तँ ओ लोकनि भारतीय वीरगाथाक श्रेष्ठतम कवि छलाह। गुणगढ़्यक वृहत्कथाकेँ ओ विशेष रू□सँ प्रशंसा कयलनि अछि, कारण विस्मय ओ रोमांससँ □रि□ूर्ण एकटा सर्वथा	</p>

	नवीन जगजियार धाराक सूत्रपात एहिसँ भेल। रोमांसक मुख्य उद्देश्य तँ मनोरंजने होइत छैक। ई अतीत कालीन राजा एवं रानी सबसँ सम्बन्धित रहैत अछि। ई पाठककेँ ओहि काल्पनिक जगतमे विचरण करबैत अछि जे सामान्यतः यथार्थ जीवनक प्रतिबन्धित सीमासँ बाहरक वस्तु थिक। ई स्वयंमे सम्पूर्ण विश्व नहि थिक। ई मानव-व्यवहारिक किछु खास गुणकेँ गम्भीर एवं व्यापक बनबैत अछि एवं एहि व्यापकता सँ मानवाकृतिक पुनर्निमाण करैत अछि। ई अनुभवक किछु क्षेत्र कँ स्पर्श नहि करैत अछि, से एहि लेल जे किछु निश्चित प्रसंगपर पूर्ण एकाग्रता तावत धरि आवश्यक जावत धरि ओ जाज्वल्यमान् भऽ स्वयं जीवन-ज्योतिक बौध करबैत अछि।* (देखू, गिलियन बियर, द रोमांस, मेथुअन, लन्दन 1970, पृ.3)	
<p>	यद्यपि एक अंर्थमे ई आधुनिक उपन्यासक अग्रदूत थिक, परन्तु उपन्यास स्पष्टतः भिन्न एहि हेतु अछि जे, ओहिमे कोनो यथार्थ सामाजिक जीवनक अभिव्यंजनाक अभाव छैक। ‘रोमांस’ शब्द सामान्यतः अनुश्रुत देवता, राजा एवं रानीक जीवन धरि सीमित अछि एवं एहि अर्थ मे बाणक उभय रचना निश्चित रूपसँ गद्य-रोमांस-रचना मानल जायत, यद्यपि हमरा लोकनिकेँ दुनू रचनामे ठाम-ठाम राजसेवक लोकनिक व्यक्तिगत जीवनक यथार्थताक झलक भेटैत अछि। हर्षचरितमे ई किछु बसिए अछि।	</p>
<p>	बाणक कादम्बरीक मूल स्रोत निश्चित रूपेँ मूल बृहत्कथा थिक जे एकर परवर्त्ती छन्दोबद्ध संस्करण तुलनासँ निश्चित होइछ। किन्तु ओतऽ ई कथा अत्यन्त सरल रूपमे छल एवं ओकर विस्तारक कोनो प्रयासो नहि भेल छल। बाण एही क्षीण कथाकेँ आधार बनौलनि आ एहि पर शब्दक कुशल शिल्पी जकाँ कार्य कयलनि। एहिमे प्रणय महाकाव्यक ैलीमे बीच बीचमे अनेकानेक पारस्परिक एवं दीर्घ वर्णन जोड़ि ओहिमे समृद्ध अलंकारक जरीकेँ जटित कऽ देलनि। जखन आधुनिक पाठक प्राचीन संसारक रोमाण्टिक दुनियाकेँ एवं धुप-छाह चित्रण शैलाक अनुकूल अपनाकेँ कल्पनाशील बना पबैत अछि तखने ओ कादम्बरीक सौन्दर्यक प्रति वस्तुतः संवेदनाशील भऽ सकैछ। प्राचीन भारतक सुविधाभोगी वर्ग अनेको शताब्दी धरि एकरा प्राप्त कऽ सकलाह जे हुनका लोकनि द्वारा मुक्त कण्ठसँ कयल गेल प्रशंसासँ स्पष्ट बछि। हुनका सब लेल बाणक प्रशंसा आ साहित्य-रसिकता दुनू पर्यायवाची छल। कनिये बेसी परिश्रम एवं अध्यवसायसँ भारतक सामान्य संस्कृत पाठकक लेल एखनो बाणक कृतिक रसास्वादन असम्भव नहि अछि, यद्यपि ई स्वीकार्य जे पाश्चात्य अभिरुचि लेल बाण अभिशाप थिकाह। यथार्थवादक भक्त लोकनिक रुचि पर रोमांसक आलंकारिकता निश्चये आघात करत।	</p>
<p>	परन्तु पश्चिममे सेहो साहित्यिक कल्पनाक दीर्घ एवं गौरवपूर्ण इतिहास रहलैक अछि। आलोचक आब ई मानऽ लगलाह अछि जे रूपक अलंकरणक साधने मात्र नहि अपितु अन्तर्दृष्टिक माध्यम सेहो थिक। एतेधरि जे विरोधाभास, जाहिमे विसंगति पूर्णकल्पनाक उड़ान रहैछ, तकरा लेखकक काव्यक्षमता मात्र नहि, अपितु कोनो ने कोनो काव्यसत्यक निर्देश रूपमे स्वीकारल जा रहल अछि। शैक्सपीयर पर्यन्त पाषाणमे प्रवचन एवं प्रवहमान् सरितामे पुस्तक’क गप्प करैत छथि। अतः अपन संसारक अवलोकन करबाक लेल ई पूर्णतया नबीन एवं काव्यात्मक पद्धति भऽ सकैत अछि, जकर स्वाभाविक भाषारूपक एवं विरोधाभास थिक। एहि भौतिक जगत कँ सौन्दर्य वा आध्यात्मिकताक प्रतीक रूपमे दखल जा सकैछ। विशेषतः भारतमे, कविलोकनि पौराणिक कल्पनामे सतत मगन रहैत अयलाह अछि एवं ओ लोकनि कवि-समयक अद्वितीय पद्धतिक विकास कयलनि अछि।	</p>

</body></text>
</Doc>